Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

16

रामायण कथा केन्द्रित उपन्यासों की समीक्षा

डॉ. कुमकुम सिंह दरबार
आणंद गुजरात

रामायण एवं महाभारत केन्द्रित उपन्यासकारों में प्रथम उपन्यासकार का स्थान नरेंद्र कोहली का माना जाता है। उन्होंने रामायण एवं महाभारत पर केन्द्रित अनेक उपन्यास लिखे हैं। रामायण में राम को केंद्र में रखकर एवं महाभारत में कृष्ण को केंद्र में रखकर लिखे हैं। नरेंद्र कोहली जी का जन्म 6 जनवरी 1940 को हुआ था, एवं निधन 17 अप्रैल 2001 को हुआ। उन्हें 2017 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है, एवं मरणोपरांत 6 जनवरी को हिंदी साहित्य जगत में "साहित्यकार दिवस" के रूप में मनाया जाता है। हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में कोहली जी की साहित्यिक रचनाएं उपलब्ध है। लेकिन सबसे अधिक रामायण और महाभारत केंद्रित उपन्यास है। राम और कृष्ण को एक आदर्श पुरुष के रूप में कोहली जी ने प्रस्तुत किया हैं। आदर्श रूप में राम और कृष्ण को दिखाया है। उनके संघर्षों को खूब सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। राम के जन्म से लेकर वनवास गमन के समय की स्थिति एवं सहन शक्ति के साथ-साथ आदर्श विचारधारा को दर्शाया है। वहीं पर कृष्ण लीला का वर्णन बहुत ही मार्मिक रूप में अलग-अलग भागों में किया है। पात्रों को सुंदर बनाकर उनके विचार को, उनकी सहनशक्ति को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि, नरेंद्र कोहली के उपन्यासों पर सबसे अधिक शोध कार्य किया गया है। रामायण, महाभारत पर दर्जनों से अधिक शोध कार्य किये गये है, अलग-अलग विश्वविद्यालय में।

'दीक्षा' महाभारत केंद्रित उपन्यास है। नरेंद्र कोहली जी का यह प्रथम रामायण केंद्रित उपन्यास है। जिसमें राम के सीता साथ विवाह का वर्णन है। परशुराम की पराजय की बात है। विश्वामित्र के सिद्ध आश्रम में राक्षसों के उत्पादन के कारण राजा दशरथ से विश्वामित्र मदद मांगते हैं। वह चतुरंगिणी सेवा की जगह राम को चुनते हैं। विश्वामित्र राम को दीक्षा देते हैं और प्रतिज्ञा करवाते हैं कि-" अपने विरुद्ध हुए अत्याचारों का तो प्रतिकार तुम करोगे ही, अन्यजनों की पीड़ा भी मिटाओगे, जहां कहीं अत्याचार होगा तुम अपने प्राणों का प्रण लगाकर भी उसका विरोध करोगे।"

'अवसर' रामायण केंद्रित नरेंद्र कोहली जी के दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में अयोध्या कांड का वर्णन है। कैकई की चाल पूरी अयोध्या नगरी को प्रभावित करती है। इन सारी परिस्थितियों को राजा दशरथ देखकर चिंतित होते हैं। भरत और शत्रुघ्न मामा के राज्य की ओर जाते हैं और कैकई स्वयं को कारागार में बंद करवा देती हैं। भरत उपस्थित नहीं है , तभी राम का राज्याभिषेक करने की घोषणा होती हैं। किंतु कैकई की योजना के आगे दशरथ निष्फल होते हैं। कैकई को दिए वचन में दशरथ बंध जाते हैं। दशरथ की हालत बिगड़ने पर राम चिंता करते हैं तो कैकई स्पष्ट कर देती है कि -"राम मैंने दो वचन मांगे हैं पहला तुम्हारे राज्याभिषेक के लिए प्रस्तुत की गई सामग्री से ही भरत का राज्याभिषेक हो, और दूसरा तपस्वी भेष में तुम आज ही 14 वर्षों के लिए वनवास के लिए प्रस्थान करो।"

मां के यह वचन सुनकर राम विनम्र हो जाते हैं। वह मां की खुशी में अपनी खुशी को देखते हैं। मां की जैसी इच्छा है, वैसा ही होगी यह कह राम वन गमन करते हैं। साथ में लक्ष्मण और सीता भी जाते है। वन में भारद्वाज के आश्रम में रुकते हैं। तभी पिता की मृत्यु की खबर प्राप्त होती है। राम पिता से नहीं मिलने पाने का दुख व्यक्त करते हैं और भावपूर्ण हो जाते हैं। तभी भरत, राम से मिलने के लिए आश्रम में आते हैं और अयोध्या लौट जाने के लिए निवेदन करते हैं। भरत की बात राम नहीं मानते हैं और वह अयोध्या जाने से मना कर देते हैं। तब भरत निराश होकर राम के खराऊ लेकर अयोध्या लौट जाते हैं। और खराऊ को रखकर राम की उपस्थित होने की एहसास करते हुए अयोध्या नगरी को संभालते हैं।

'संघर्ष की ओर' रामायण केंद्रित नरेंद्र कोहली जी की तीसरा उपन्यास है। जिसमें अरण्यकांड की घटनाओं को विशेष रूप से दिखाया गया है। इसमें सारभाग्य ऋषि अपने लोगों को राक्षसों से बचाने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन वह सफल नहीं होते हैं। फिर वह निराश होकर आत्मदाह करने लगते हैं। वहीं पर राम-सीता और लक्ष्मण ठहरे हुए हैं। राम आकर राक्षसों को दंड देते हैं। राम, नगरवासियों के अंधविश्वास को दूर करते हैं। एक कहानी सुनाते हैं और उन्हें कहते हैं कि आप स्वयं अपनी रक्षा करें। अपने आप को मजबूत बनाये और राक्षसों का डटकर सामना करें।

इसी प्रकार से 'युद्ध भाग 1' में बाली के पराक्रम और हनुमान द्वारा सीता की खोज की कथा है। राम अपने आश्रम में लौटते हैं तब वहां सीता उन्हें नजर नहीं आती है। वह अपनी कुटिया में सीता की खोज करते हैं लेकिन सीता कहीं भी दिखाई नहीं देती है। तब राम चिंतित होते हैं और वह वन की ओर जाते हैं। सीता की खोज करने के लिए रास्ते में राम को कौच मिलता है जो रावण का पता बताता है कि रावण किष्किन्धा नदी की ओर गया है। रावण सीता को लेकर गया है और वह राम-राम कह रही थी। उधर मंदोदरी अपने पति रावण को समझाती है कि तुम सीता को वापस लौटा द, जिसकी पत्नी है उसे दे दो लेकिन रावण मंदोदरी की बात को नहीं सुनता है। वह नहीं लौटाने का प्रण करता है। गुस्से में आकर मंदोदरी पुत्र मेघनाथ को कहती है कि-" तेरे जैसा पितृ भक्त पुत्र मैंने नहीं देखा, इंद्रजीत तुझे पाकर तेरे पिता फूले नहीं समाते होंगे पर मैं सोचती हूं कि तू इतना पितृभक्त ना होता तो शायद तेरे पिता का कल्याण होता जा पुत्र मै सुलोचना को उसका भविष्य बता दूंगी।"

©Copyright 2025 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

'युद्ध भाग 2' रामायण कथा केंद्रित नरेंद्र कोहली जी का पांचवा उपन्यास है। इस उपन्यास में हनुमान जी लंका की ओर जाते हैं, और सीता मैया की खोज करते हैं। उन्हें अशोक वाटिका में सीता मैया मिलती है तो, उनको अंगूठी देकर विश्वास जताते हैं कि वह राम के सैनिक है और राम द्वारा ही भेजे गये है। यह बात सुनते ही सीता संतुष्ट हो जाती है कि राम अवश्य ही उन्हें लेने के लिए आएंगे। रावण द्वारा हनुमान को बंदी बना लेने पर हनुमान लंका जलाते हैं। तब रावण के सैनिक हनुमान को पकड़ लेते है, और उनकी पूछ में आग लगा देते है। हनुमान गुस्से में आकर लंका जलाते हैं और फिर अपनी पूछ को समुद्र में जाकर बुझाते हैं। तभी विभीषण और कुंभकरण रावण को समझते हैं कि -"राम से युद्ध नहीं करना है, कुंभकरण रावण से कहता है कि-" आप कामांगिन में जल रहे हो तो क्या सारे राक्षस को युद्धगिन में जला डालोगे। आपने बिना किसी से परामर्श किए यह अनुचित कार्य कर डाला है। किसी की पत्नी के हरण का क्या अर्थ है?"

इस प्रकार नरेन्द्र कोहली के उपन्यास साहित्य में हमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता, रहन - सहन, धार्मिकता और आध्यात्मिक विचारधारा का प्रभुत्व देखने को मिलता है। रामायण केन्द्रित उपन्यासों में श्री राम जीवन और उनके संघर्षों का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत होता है। समाज में आदर्श की स्थापना और मर्यादा का पाठ श्री राम पढ़ाकर जाते है।

संदर्भ सूची

1. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युग चेतना, डॉ. अजय पटेल, पृष्ठ पृ. संख्या - 16
2. वहीं, पृ. संख्या - 17
3. वहीं, पृ. संख्या - 20
4. वहीं, पृ. संख्या - 21